लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1233

19 सितंबर, 2020 को उत्तर के लिए

इस्पात की मांग में गिरावट

1233. श्रीमती किरण खेरः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या भारतीय इस्पात उद्योग ने चालू वित्त वर्ष में इस्पात की मांग में गिरावट देखी है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या मांग में गिरावट से इस्पात का अधिशेष हुआ है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार दक्षिण पूर्व एशिया या मध्य पूर्व के देशों को इस्पात के निर्यात को बढ़ाने के लिए विकल्प तलाश कर रही है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

इस्पात मंत्री **(श्री धर्मेंद्र प्रधान)**

(क): वर्तमान वर्ष अर्थात् अप्रैल-अगस्त 2020 तथा विगत वर्ष की उसी अवधि के दौरान भारत में कुल तैयार इस्पात (नॉन-अलॉय तथा अलॉय/स्टेनलेस) की खपत का ब्यौरा निम्नलिखित है:

मद	**कुल तैयार इस्पात (अलॉय+नॉन-अलॉय)**		
	अप्रैल-अगस्त 2020 (एमटी)*	**अप्रैल-अगस्त 2019 (एमटी)**	**% परिवर्तन***
खपत	26.41	42.54	-37.9
स्रोत: संयुक्त संयंत्र समिति की रिपोर्ट; एमटी=मिलियन टन; *अनंतिम			

(ख): चूंकि अप्रैल-अगस्त 2020 के दौरान कुल तैयार इस्पात की उपलब्धता में भी कमी आई है, जैसा कि नीचे इंगित है, माँग में गिरावट से अधिशेष नहीं हुआ है:

मद	**अप्रैल से अगस्त 2020 तक कुल तैयार इस्पात की उपलब्धता (अलॉय/स्टेनलेस तथा नॉन-अलॉय) (एमटी)***
क) कुल उत्पादन	29.05
ख) आयात	1.67
ग) निर्यात	5.68
उपलब्धता (क+ख-ग)	25.04
स्रोत: संयुक्त संयंत्र समिति की रिपोर्ट; एमटी=मिलियन टन; *अनंतिम	

(ग) और (घ): चूंकि इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है, अतः इस्पात कंपनियाँ देशी तथा विदेशी व्यापार, दोनों के लिए वाणिज्यिक सोच-विचारों तथा बाजार के समीकरणों के आधार पर अपने खुद के निर्णय लेती हैं। तथापि, सरकार ने निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं, अर्थात्:

(i) निर्यात प्रोत्साहन योजनाएं जैसे कि मर्चेंडाइस एक्सपोर्ट्स फ्रॉम इंडिया स्कीम (एमईआईएस), मार्किट एक्सेस इनिशिएटिव, निर्यात संवर्धन परिषद, एडवांस अथॉराइजेशन, निर्यात संवर्धन पूँजीगत माल (ईपीसीजी) इत्यादि।

(ii) महत्वपूर्ण इनपुट जैसे कि कोकिंग कोल, लौह अयस्क, स्टील स्क्रैप, निकेल इत्यादि पर अत्यल्प आयात शुल्क जारी रखना।

(iii) मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक को प्रोत्साहित करना तथा लॉजिस्टिक लागत में कमी लाने के लिए अंतर्देशीय जलमार्गों और तटीय पोत परिवहन के उपयोग को बढ़ाना।

(iv) इस्पात क्षेत्र को संवर्धित निर्यातों के लिए और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायता करने के लिए कैप्टिव लौह अयस्क खदानों का आवंटन और इस्पात कलस्टरों पर बल देना।

****